© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

छात्रों के समायोजन और आत्म-प्रेरणा पर उच्च और निम्न विद्यालय के वातावरण का प्रभाव

पद्मा कुमारी
शोधार्थी (मनोविज्ञान विभाग), मगध विशवविद्यालय, बोधगया

शोध निर्देशक
प्रो० कृष्णानंद
(मनोविज्ञान विभाग), एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद

सार

बड़े बच्चों और किशोरों में शैक्षिक सफलता की भविष्यवाणी करने में अकादमिक आत्म-प्रभावकारिता महत्वपूर्ण पाई गई है, लेकिन बहुत कम काम ने बहुत छोटे बच्चों के लिए इसे संबोधित किया है। इस अध्ययन ने पता लगाया (ए) क्या प्राथमिक ग्रेड में शहरी प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के बीच अकादमिक आत्म-प्रभावकारिता पढ़ने की उपलब्धि से जुड़ी हुई प्रतीत होती है, (बी) क्या कोई इस आयु वर्ग के भीतर आत्म-प्रभावकारिता और आत्म-अवधारणा की अवधारणाओं के बीच अंतर कर सकता है, और, यदि ऐसा है, जिसमें उपलब्धि को पढ़ने के लिए अधिक भविष्य कहनेवाला शक्ति है, और (सी) क्या छात्र प्रेरणा और कक्षा व्यवहार आत्म-प्रभावकारिता और पढ़ने के बीच संबंधों में मध्यस्थता करते हैं। रैंडम इफेक्ट मल्टी-लेवल मोड लिंग के निष्कर्ष बताते हैं कि प्राथमिक ग्रेड के बच्चे आत्म-प्रभावकारिता और आत्म अवधारणा के बीच अंतर कर सकते हैं, और यह कार्य-विशिष्ट आत्म-प्रभावकारिता थी जिसने पढ़ने की उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं किया। दो संभावित मध्यस्थों में से, छात्र प्रेरणा ने आत्म-प्रभावकारिता और पढ़ने की उपलब्धि के बीच संबंधों में महत्वपूर्ण रूप से मध्यस्थता की। युवा, कमजोर वर्ग के बीच उपलब्धि बढ़ाने में स्कूल के सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका के लिए निहितार्थ बच्चों की चर्चा की जाती है।

मुख्य शब्द : स्व-प्रभावकारिता _ पठन उपलब्धि _ आत्म-अवधारणा

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

परिचय

विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहां पर शिक्षार्थियों को शिक्षा दी जाती है ताकि छात्रों में बौद्धिक एवं नैतिक गुणों का विकास हो सकें। साथ ही वातावरण का प्रभाव बालक के शारीरिक विकास पर भी पड़ता है। विद्यालय एक ऐसा स्थान है जो चहारदीवारी के बाहर बृहद समाज का प्रतिबिंब है। इस प्रकार विद्यालय का पूरा वातावरण शिक्षार्थी के भविष्य एवं उसके निर्माण कि एक भट्टी के रूप में तैयार की गई एक पद्धति है। जहां पर बालकों का सर्वांगीण विकास होता है। इसमें प्रयाः शिक्षा के अतिरिक्त विभिन्न कौशलों का भी विकास होता है। जिससे कि छात्रों में सामाजिक एवं आर्थिक चेतनाओं की वृद्धि हो सके। जिसमें वाद-विवाद, खेलकूद, जिमनास्टिक एवं अन्य प्रशिक्षण कौशलों को रखा जाता है।

विद्यालय वातावरणः- विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत उन सभी तथ्यों का समावेश होता है जो विद्यालय के वातावरण को स्वस्थ्य रखने, बालकों में स्वस्थ जीवन व्यतीत करने की आदतों के निर्माण में सहायक सिद्ध होता है। विद्यालयी वातावरण निर्माण करने में पास-पड़ोस, भवन का प्रकार, खेल के मैदान, स्वच्छता, वायु, जल, मिट्टी, प्रकाश की व्यवस्था तथा फर्नीचर आदि का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि भवन गन्दे एवं अवांछनीय स्थान पर स्थित हो तो उसमें प्रकाश एवं वायु की समुचित व्यवस्था सम्भव नहीं हो सकता। यदि विद्यालय में बैठने के लिए उचित फर्नीचर, खेल-कूद के लिए मनोरंजन के साधनों का अभाव है, तो बालक का शारीरिक व मानसिक विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पायेगा और उसकी अधिगम प्रक्रिया तथा स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा।

बच्चों के गुणों का विकास परिवार समुदाय और विद्यालय इन तीनों का प्रभाव उनके परिवेश पर पड़ता है। जबकि विद्यालय वातावरण बालकों के व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष रूप से अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि बालकों को विद्यालय में अनुकूल वातावरण मिले तो

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

बालकों में आत्मप्रेरण एवं आत्मसंकल्पना बालक सही दिशा में प्रगति करते हैं। विद्यालय का वातावरण बालकों के लिए समुचित विकास में निम्न स्तरीय योग्यताओं पर पड़ता है।

शिक्षा मानव जीवन की सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक है। क्योंकि मानव शिक्षा के माध्यम से उनके क्षितिज का विकास हो सकता है, इसलिए वे हर समस्या से निपटने में सक्षम होंगे और अपनी पहचान खोए बिना एक रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ खुले दृष्टिकोण से बदल सकते हैं। सरकार ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई प्रयास और नीतियां बनाई हैं, जिनमें शामिल हैं: पाठ्यक्रम को पूरा करना, प्राथमिक विद्यालय और जूनियर हाई के छात्रों के लिए अपस्कूल फीस मुक्त करना, ऐसी गतिविधियां करना जो उनके सोच कौशल में सुधार कर सकें, पूर्ण सुविधाएं और बुनियादी ढांचे जैसे: विज्ञान प्रयोगशालाओं, कंप्यूटर प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और कई अन्य सुविधाओं और बुनियादी ढांचे जो छात्र सीखने का समर्थन करते हैं, सीखने के मॉडल और विधियों को अद्यतन करते हैं, और प्रमाणन शिक्षक, उन्नयन और सेमिनार आयोजित करते हैं। विज्ञान के पाठ 2013 के पाठ्यक्रम के अनुसार, इस बात पर जोर देते हुए कि छात्रों को प्रत्येक विज्ञान पाठ में कौशल, अवधारणाओं और सिद्धांतों के साथ सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। स्तर पर समायोजित करना सीखना कठिन होता जाएगा। प्राथमिक विद्यालय में, विज्ञान के पाठ केवल प्रकृति और पर्यावरण के परिचय तक ही सीमित होते हैं, जबकि जूनियर हाई स्कूल विज्ञान के पाठ अधिक केंद्रित होते हैं। जूनियर हाई स्कूल में विज्ञान का दायरा उत्पादक क्षमता और अमूर्त अवधारणाओं के विस्तार से संबंधित प्राकृतिक घटनाओं से संबंधित मुद्दों के अलावा, प्राकृतिक घटनाओं और दैनिक जीवन में इसके आवेदन पर ध्यान केंद्रित करता है। अमूर्त अवधारणाओं के बारे में सीखने से छात्रों को विज्ञान के पाठों को समझने में कठिनाई होती है। इसलिए छात्रों को विज्ञान विषय के प्रति दृष्टिकोण रखना चाहिए।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

अभिवृत्तियाँ किसी वस्तु, विचार, स्थिति या मूल्य के सामने कार्य करने, सोचने, समझने और महसूस करने की व्यक्ति की प्रवृत्ति होती हैं। इसके अलावा, विज्ञान के प्रति यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि होगी या उनमें भावनाएँ होंगी। यह कथन बताता है कि विद्यार्थी को विज्ञान पसंद है या नहीं। प्राकृतिक विज्ञान के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को जानने के लिए उसके अनुसार मापी गई अभिवृत्ति (टेस्ट ऑफ साइंस-एटिट्यूड रिलेटेड)। छात्रों के पास जो दृष्टिकोण हैं, उनका शिक्षण में आत्म-नियमन और छात्र प्रेरणा पर प्रभाव पड़ता है। विज्ञान शिक्षा में कई अध्ययनों ने साबित किया है कि प्रेरणा और स्व-नियामक क्षमता दो महत्वपूर्ण कारक हैं जो सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की सफलता को निर्धारित करते हैं। प्रेरणा हमेशा सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने और छात्र सीखने के विकास को प्रभावित करने के लिए सकारात्मक छात्र व्यवहार को ऊर्जा प्रदान करने, निर्देशित करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सीखने के लिए उच्च प्रेरणा वाले छात्र सीखने में सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जैसे सीखने की प्रक्रिया का पालन करने पर ध्यान केंद्रित करना, जो कक्षा गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होता है, अक्सर शिक्षकों के प्रश्न दर्ज करता है, और हमेशा सीखने का समय होता है। इसके अलावा, प्रेरणा मुख्य आवश्यकता है कि छात्रों को अपने स्वयं के नियामक कौशल की आवश्यकता होती है। स्व-नियामक क्षमता में दो मुख्य घटक होते हैं; उपयोग करने की क्षमता, प्रभावी और कुशल सीखने की रणनीति, और सीखने की प्रक्रिया में हमेशा सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए खुद को प्रेरित करने की क्षमता। कहा जाता है कि छात्रों में स्व-नियमन की क्षमता होती है यदि वे विभिन्न प्रकार की सीखने की रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं, और सक्षम हो सकते हैं यह तय करने के लिए कि इस रणनीति का सही संदर्भ में कब, क्यों और कैसे उपयोग किया जाए। विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न शोध साहित्य से पता चलता है कि सीखने का माहौल एक प्रमुख कारक है जो छात्रों को उच्च प्रेरणा और अच्छे स्व-नियामक कौशल के लिए प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

भूमिका निभाता है। अब तक, बहुत सारे शोध हुए हैं जो यह साबित करते हैं कि रचनावाद-आधारित सीखने का माहौल विज्ञान सीखने में छात्रों की प्रेरणा बढ़ाने के लिए छात्र उन्मुख (छात्र-केंद्रित सीखने) पर केंद्रित है। किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि अभिविन्यास और जांच का कार्य सीखने के माहौल में एक मनोसामाजिक कारक है जिसका प्रेरणा और आत्म-नियमन सीखने पर सबसे सकारात्मक और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हालांकि, सीखने के माहौल के मनोसामाजिक कारकों का पता लगाने के लिए इंडोनेशिया में सीमित अध्ययन हैं, जो छात्र प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, साथ ही प्रेरणा के आयाम का विश्लेषण करते हैं जो एकीकृत विज्ञान सीखने में आत्म-नियमन के गठन के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध है। इसलिए, अनुसंधान अंतराल को दूर करने के लिए, इस अध्ययन का मुख्य लक्ष्य सीखने के माहौल के मुख्य कारकों का पता लगाना है जो प्रेरणा और स्व-नियमन रणनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं, और प्रेरक सीखने के मुख्य घटकों का मूल्यांकन करते हैं। विज्ञान सीखने में सीखने के माहौल, प्रेरणा और छात्र स्व-नियमन रणनीतियों के बीच संबंधों के संरचनात्मक मॉडल स्थापित करके छात्रों की स्व-नियामक रणनीतियों के उपयोग पर महत्वपूर्ण प्रभाव एकीकृत ज्ञान। प्रेरणा छात्रों के सीखने का एक मूलभूत तत्व है; शिक्षक कक्षा में इष्टतम उपलब्धि के लिए प्रेरणा बढ़ाने और विकसित करने में सहायता कर सकते हैं। एक सहायक कक्षा के वातावरण की सुविधा, सीखने के अनुभवों, लक्ष्य निर्धारण और शिक्षक उत्साह की सुविधा के माध्यम से, शिक्षक छात्रों को उनके सीखने में खुशी और उत्साह खोजने के लिए सशक्त बना सकते हैं। इस पत्र का उद्देश्य कक्षा में आंतरिक प्रेरणा के महत्व के बारे में मेरी अपनी समझ की जांच करना है, क्योंकि यह सेवा पूर्व शिक्षकों पर लागू होता है। सेवा-पूर्व शिक्षक की शिक्षाशास्त्र का एक महत्वपूर्ण घटक उन तरीकों की जांच करना है जिसमें छात्र सीखने की इच्छा के लिए सीखने की सराहना करते हुए स्व-प्रेरित शिक्षार्थी बन सकते हैं।

सहायक सीखने का माहौल

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

एक सहायक सीखने के माहौल का निर्माण कक्षा में सफल शिक्षार्थियों के विकास में सहायता कर सकता है, जहां छात्र सीखने के आनंद के लिए सीखना चाहते हैं, आंतरिक प्रेरणा का केंद्र। एक सहायक वातावरण में आवश्यक रूप से शिक्षकों को छात्रों की व्यक्तिगत सीखने की क्षमताओं के लिए उच्च अपेक्षाएं शामिल होती हैं। इसमें शिक्षार्थियों के समीपस्थ विकास के क्षेत्र में सीखने के परिणामों को सुनिश्चित करना शामिल है, जिसका अर्थ है कि शिक्षकों को ऐसे कार्य प्रदान करने की आवश्यकता है जो गुणवत्ता समर्थन की मध्यस्थता के माध्यम से अभी तक चुनौतीपूर्ण हैं, प्राप्त करने योग्य हैं। एक निर्देशित पठन सत्र में, उदाहरण के लिए, शिक्षक शुरू में उन पाठों का चयन करता है जो शिक्षार्थियों को स्वतंत्र रूप से कठिन लग सकते हैं, लेकिन गुणवत्ता समर्थन और उचित मचान के माध्यम से, शिक्षार्थी पाठ को सफलतापूर्वक पढ़ने में सक्षम होता है। प्रश्न पूछने की तकनीक जैसी मचान रणनीतियाँ छात्रों को पढ़ते समय प्रेरित कर सकती हैं। प्रश्न पूछने के माध्यम से शिक्षक और छात्र सहयोगात्मक रूप से पाठ के अर्थ पर चर्चा करते हैं, छात्रों को पढ़ने, सारांशित करने, स्पष्ट करने और भविष्यवाणी करने में संलग्न होते हैं, साथ ही साथ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं और उच्च-क्रम सोच कौशल विकसित करते हैं। प्रेरणा को बढ़ाया जाता है क्योंकि छात्र आत्म-संतुष्टि की भावना प्राप्त करते हैं क्योंकि वे पाठ और कार्य को पूरा करने में सक्षम हैं। यह सुनिश्चित करना कि कार्य न तो बहुत कठिन हैं और न ही बहुत आसान हैं, शिक्षार्थी की हताशा को कम करेगा और शिक्षार्थी में आत्मविश्वास की अनुमति देगा। एक सहायक सीखने का वातावरण भेदभाव से मुक्त है और आपसी सम्मान पर आधारित है, जिसमें शिक्षकों के साथ-साथ साथी वर्ग के सदस्यों का सामाजिक समर्थन शामिल है। कक्षाओं में अक्सर यह पाया जाता है कि छात्र गलत उत्तर देने और/या सहपाठियों द्वारा छेड़े जाने के डर से कक्षा की चर्चाओं में भाग लेने से हिचकिचाते हैं। समूह गतिविधियों का उपयोग करने वाले शिक्षक कक्षा में सामाजिक समर्थन कौशल के विकास में छात्रों की सहायता कर सकते हैं, छात्रों को यह समझने की अनुमति देकर कि क्या गलतियाँ करना 'ठीक' है क्योंकि

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

इसी तरह नई शिक्षा होती है। पर्यावरण का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि यह यहाँ है कि अधिकांश ज्ञान उत्पन्न और आंतरिक किया जाता है।

साहित्य की समीक्षा

(तांती एट अल। 2020) ने छात्रों के आत्म-नियमन और विज्ञान सीखने में प्रेरणा का अध्ययन किया, "तांति1" ने पाया कि छात्रों के अध्ययन के लिए छात्र का स्व-नियमन और प्रेरणा आवश्यक है। विशेष रूप से 21वीं सदी के सीखने के साथ छात्रों को शिक्षकों की तुलना में सीखने में अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है। इस मिश्रित तरीके के शोध का उद्देश्य छात्रों के सीखने की प्रेरणा के साथ छात्रों के स्व-नियमन के बीच प्रभाव को निर्धारित करना है। नमूना का आकार इंडोनेशिया के जंबी शहर में मदरसा त्सनाविया के 534 छात्रों का था, जो कुल नमूना तकनीक द्वारा निर्धारित किया गया था। एसपीएसएस 21 एप्लिकेशन के साथ डेटा का विश्लेषण किया गया था ताकि वर्णनात्मक आंकड़ों के साथ-साथ सरल प्रतिगमन का उपयोग करके अनुमानित आंकड़े और स्वतंत्र नमूना टी-टेस्ट का उपयोग करके तुलना की जा सके। इस शोध के परिणाम स्व-नियमन और सीखने में छात्र प्रेरणा दोनों में प्रमुख हैं, जो आत्म-नियमन और सीखने में छात्रों की प्रेरणा के बीच संबंध और प्रभाव से मजबूत होता है। इसे sig = 0.019 के मान से देखा जाता है और इसमें 70.3% का योगदान होता है। परिणामों के अनुसार, यह अनुशंसा की जाती है कि छात्रों को सीधे सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए और शिक्षकों को नवीन शिक्षण करना चाहिए।

(वेलेरियो 2012) ने "कक्षा में आंतरिक प्रेरणा कक्षा में आंतरिक प्रेरणा" का अध्ययन किया और पाया कि प्रेरणा एक छात्र के सीखने और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्रों में नए ज्ञान और समझ की इच्छा विकसित करने के लिए शिक्षकों की शिक्षाशास्त्र का हिस्सा है, जिसे आंतरिक प्रेरणा के रूप में जाना जाता है। सभी छात्र अद्वितीय हैं; शिक्षक, विभिन्न प्रेरक तकनीकों को लागू करने के माध्यम से, छात्रों की भागीदारी और आत्म-अभिव्यक्ति पर काफी

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 13 Issue: 01 | January - March 2022
Paper is available at http://www.jrps.in | Email : info@jrps.in
Refereed & Peer Reviewed

प्रभाव डाल सकते हैं। व्यक्तिगत शिक्षकों में सीखने को सशक्त बनाने की क्षमता होती है, जिससे कक्षा की ऊर्जा उत्साह और प्रत्याशा से भर जाती है। इस पत्र का उद्देश्य कक्षा के भीतर आंतरिक प्रेरणा के महत्व के बारे में मेरी अपनी समझ की जांच करना है, क्योंकि यह सेवा पूर्व शिक्षकों पर लागू होता है। सेवा-पूर्व शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे आजीवन शिक्षार्थियों को विकसित करने और प्रभावी अभ्यास विकसित करने की प्रक्रिया के भाग के रूप में कक्षा में छात्रों को प्रेरित करने के तरीकों के बारे में सोचें।

निष्कर्ष

एक शिक्षक के शिक्षण में प्रेरणा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सेवा-पूर्व शिक्षक के रूप में यह सोचना महत्वपूर्ण है कि कक्षा में छात्रों को आंतरिक रूप से कैसे प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षक एक सहायक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण वातावरण प्रदान करके अपने छात्रों को सशक्त बना सकते हैं और आगे बढ़ा सकते हैं, जहां शिक्षण प्राप्त किया जा सकता है और शिक्षकों और छात्रों दोनों द्वारा समर्थित है। आंतरिक प्रेरणा में शिक्षकों को विकल्प प्रदान करना, छात्रों को लक्ष्य निर्धारित करने और उनकी रुचियों और जिज्ञासाओं की जांच करने में सक्षम बनाना शामिल है। रिच टास्क के कार्यान्वयन के माध्यम से, छात्र सामग्री से जुड़ने और सीखने में संलग्न होने में सक्षम होते हैं। शिक्षक छात्रों के लिए रोल मॉडल हैं; एक शिक्षक जो सीखने के लिए अपने स्वयं के जुनून और उत्साह का प्रदर्शन करता है, इन गुणों को कक्षा में स्थानांतरित कर देगा, जिससे आंतरिक छात्रों का विकास होगा। सीखने की इच्छा के लिए छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करने से संभावनाओं की दुनिया खुल सकती है। आंतरिक प्रेरणा छात्रों के सीखने में एक मौलिक तत्व है, शिक्षकों के पास सीखने के अनुभवों को लागू करने का प्रभाव होता है जो छात्रों को ज्ञान को सार्थक देखने और अपने सीखने पर स्वामित्व लेने की अनुमति देता है।

संदर्भ

- तांती, मैसन, बॉबी सईफ्रिनांडो, महबूब दरयांतो, और हयू सलमा। 2020 "स्टूडेंट्स सेल्फ रेगुलेशन एंड मोटिवेशन इन लर्निंग साइंस।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इवैल्यूएशन एंड रिसर्च इन एजुकेशन 9(4):865-73. डोई: 10.11591/ijere.v9i4.20657।
- वैलेरियो, क्रिस्टल। 2012। "कक्षा में आंतरिक प्रेरणा कक्षा में आंतरिक प्रेरणा।" जर्नल ऑफ़ स्टूडेंट एंगेजमेंट: एजुकेशन मैटर्स 2(1): 30–35।
- आर्थर-केली, एम।, लियोन्स, जी।, बटरफील्ड, एन। और गॉर्डन, सी। (2007)। कक्षा प्रबंधन: सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाना। साउथ मेलबर्न: सेंगेज लर्निंग।
- बैरी, के. एंड किंग, एल. (2000)। बिगिनिंग टीचिंग एंड बियॉन्ड (तीसरा संस्करण)। कटूम्बा, एनएसडब्ल्यू: सोशल साइंस प्रेस।